

# Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life

3  
2018

VOL. 150



## Founder's Essay

बुद्ध की धर्मदेशना को इस रूप में साझा करें जिससे कि प्रत्येक जन व्यवहार में ला सके

यह महत्वपूर्ण है कि बुद्ध की धर्मदेशना को कठिन सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत नहीं करें, बल्कि उसे इस रूप में साझा करें जिसे समझ सकें। बुद्ध की धर्मदेशना को सहज ही समझने लायक बनाने का अर्थ है कि उसकी व्याख्या कर लोगों को समझायें जिससे कि वे अपने दैनिक जीवन में व्यवहार में ला सकें। लोग उसके महत्व को अपने व्यवहार में अनुभव से सीख सकें, यदि उन्होंने केवल अपने विचारों से ग्रहण किया और व्यवहार में लाया है।

हम विश्वास करने में असमर्थ हैं जो हमने स्वयं वास्तव में अनुभव किया है और जब हम पूरे मन से किसी संदेह की साया से परे विश्वास करते हैं कि फल पीछे पीछे आयेगा। हम दूसरों के साथ विश्वास करने से स्वयं को रोक नहीं सकते हैं, जब लीग बुद्ध की धर्मदेशना सुनने की बात करते हैं और उसके फल का एक के बाद एक उन्हें अनुभव होने लगता है।

यदि आप किसी वस्तु की बात करते हैं, जिसकी खोज में प्रत्येक व्यक्ति है, वे वास्तव में उसे सुनना चाहेंगे और उनमें से प्रत्येक व्यक्ति अविभाजित ध्यान से आपकी ओर आगे झुकेगा। जब आप हार्दिक इच्छा से बोलते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को बुद्ध की धर्मदेशना का लाभ एवं गुण मिले, लोग धर्मोपदेश सुनने के लिए एक एक कर एकत्र होते जायेंगे।

धर्म संबन्धी वार्तालाप से लोगों को वह नहीं मिलता है जो उनकी इच्छा है—मात्र कहो, हमें क्या क्या कहना है, वैसी बातें कहते रहना जिसमें दूसरों की अभिरुचि नहीं है—लोगों को प्रभावित नहीं करेगा, चाहे हम कितना ही कठिन प्रयास कर लें।

From *Kaisozuikan* 9 (Kosei Publishing Co. 1997), pp. 130–131

### Living the Lotus Vol. 150 (March 2018)

Senior Editor: Koichi Saito  
Editor: Eriko Kanao  
Copy Editor: Parmita Shekhar

*Living the Lotus* is published monthly  
by Rissho Kosei-kai International,  
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,  
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.  
TEL: +81-3-5341-1124  
FAX: +81-3-5341-1224  
Email: [living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp](mailto:living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp)

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

## President's Message

समग्रता में खुशी का अहसास समाज के लोगों के साथ:  
रिश्शो कोसेइ काइ की स्थापना की  
अस्सीवाँ वर्षगाँठ के शुभ अवसर पर

निचिको निवानो,  
प्रेसिडेंट, रिश्शो कोसेइ काइ



नगर जहाँ अनेक बोधिसत्त्व रहते हैं

सभी लोगों को धन्यवाद, इस वर्ष रिश्शो कोसेइ काइ की स्थापना का अस्सीवाँ वर्षगाँठ है। हमारा इतिहास अपेक्षाकृत अल्पकालिक है, लेकिन तीस वर्ष पूर्व जब हमारी संस्था अपना पचासवाँ वर्षगाँठ मना रहा था, कि संस्थापक निक्क्यो निवानो ने संस्था के उद्देश्य और कार्यक्रम पर प्रकाश डाला और मासिक पत्रिका 'कोसेइ' के पृष्ठों में हमें बताया है कि "यद्यपि हमारा परम लक्ष्य समस्त मानव प्राणी का उद्धार करना है, हमें जो सबसे प्रिय है हम अवश्य किसी हालत में उसकी अवहेलना नहीं करें। हम प्रथम उन लोगों को संरक्षण दें जो आँखों के सामने हैं, अपने परिवार के सदस्यों के साथ सामंजस्य बनाये रखें और आगे बढ़कर अपने समाज का कायापलट कर सुखावतिव्यूह बना दें। हम इन कदमों के प्रति निःसंशय एवं सुस्थिर रहना कभी नहीं भूलें।" (मार्च 1988)

मैं संस्थापक द्वारा पचासवें स्थापना दिवस के अवसर पर संकल्प के महत्त्व की व्याख्या के विषय गंभीर चिन्तन करता हूँ, जबकि हम उस मील के पत्थर वर्ष का अब स्वागत कर रहे हैं और नया कदम बढ़ा रहे हैं।

इसके पूर्व मैंने कहा है कि "यदि (समाज में) प्रत्येक व्यक्ति खुश है, हम रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्यगन खुश हैं।" अपने समाज को सुखावती व्यूह बना देने का अर्थ केवल यह नहीं है कि वहाँ रहनेवाले अपनी खुशी से संतुष्ट हैं, बल्कि वे समाज के संरक्षण एवं खुशी की ओर अपनी चेतना निर्देशित करते हैं, अर्थात् लोकहित, दैनिक जीवन में किसी पक्ष की बिना उपेक्षा के, घर को खुशहाल बनाता है। यह सहालोक भी जो हमारा वास्तविक लोक है एक दिन प्रशांत उज्वल भूमि होगी।

जैसाकि संस्थापक प्रायः हम सभी को कहते थे, "सहर्ष समाज के प्रति अपना कर्तव्य निभाओ," हम जिस समाज में रहते हैं, उसके हेतु सर्वोत्तम प्रयास करना चाहिए और अपने पास वैसे लोगों को लाओ, जो परेशानी में हैं। जब परेशान लोगों का सुनते हैं, हम ध्यान से सुने कि वे क्या कहते हैं। आखिरकार, समाज बोधिसत्त्व के समान लोगों के रहने की जगह बन जायेगी और यह रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्यों का आदर्श है, जो प्रत्येक जन की खुशी की कामना करता है, क्या ऐसा नहीं है? इस अर्थ में, यदि आप निराश लोगों को देखते हैं, जिनके सामने अँधेरा है, उनके हृदय में आशा का दीप जलायें, जिसमें कि उनके चेहरे पर मुस्कान लौट आयेगा और पूरे समाज में तेज रोशनी की चमक फैल जायेगी। धर्म को जीने वाले रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्यों का यह कर्मिष्ठ अभ्यास एवं मिशन है।

### समाज के साथ घर की गरमाहट की साझेदारी

एक दिन मैंने एक फिल्म के एक अंश को देखा, जो एक नगर को संध्या में पहाड़ी की चोटी से फिल्माया गया था। जैसे ही सूर्य डूब गया, एक घर में रोशनी जल गयी, फिर एक दूसरे घर में रोशनी आ गयी, और क्रमशः रात्रि की काली चादर के नीचे पूरा नगर झिलमिलाती रोशनी में बदल गया। यह सम्पूर्ण समाज के ऊपर हर्षोल्लास फैल जाने के समान है, काश ! ऐसे दृश्य का वर्णन किया जा सकता। यह खिड़कियों से रोशनी का बाहर निकलने का दृश्य था, यद्यपि रात्रि में सर्दी थी, मुस्कराहट तथा स्नेह से घर सराबोर था, जहाँ लौट आने को प्रत्येक जन आतुर रहता है—ऐसी गरमाहट से भरपूर पारिवारिक जीवन का चित्र एक घर से दूसरे घरों में प्रसारित हो रहा है।

और, प्रथम घर तुम्हारा है। परिवार का प्रत्येक जन जीवन खुशहाल है, प्रत्येक एक दूसरे से आदर सत्कार एवं स्नेह से जुड़े हैं और उनको मन की शान्ति मिली है। अपने घर को वैसा बनाना सम्पूर्ण समाज की खुशी के लिए प्रस्थान बिन्दु है।

ऐसा क्यों है? क्योंकि आप सभी जो अपने पड़ोस के लोगों तथा समाज की चिन्ता करते हैं, आपकी भावनायें आपके कार्यों में व्यक्त होती है, जैसेकि आप सड़क को साफ झाड़ू देते हैं, और सहज ही पड़ोसियों के घरों के सामने झाड़ू देने बढ जाते हैं, या टहलने निकलते है और रास्ते में दीखे लोगों को, यद्यपि उन्हें नहीं जानते हैं, अभिनंदन में मुस्कराते हुए शुभ प्रभात या हैलो कहते हैं। मैं सोचता हूँ कि ऐसा करके आप दूसरे लोगों के साथ धीरे धीरे मधुर संबन्ध बनाते हैं और अपने मन और दूसरों के मन को समृद्ध करते हैं और समान सोच का बनने में सहायक बनते हैं – बोधिसत्व – जो समाज में रोशनी की चमक देते हैं।

इसके अतिरिक्त रिश्शो कोसेइ काइ के प्रत्येक क्षेत्र में धर्म केन्द्र हैं। यह वांछनीय है कि हमारे सदस्यगन उसे मरुद्धान की तरह नहीं मान लें, बल्कि प्रत्येक अपने शारीरिक तथा आध्यात्मिक शान्ति का स्थान भी समझें। फिर भी, उसे ऐसा स्थान बनाने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि आगे बढे निकल कर आयें और समाज को विश्वास दिलायें। जैसा कि जापानी कहावत दे-इरी-गुची (de--iri-guchi/ बाहर जाना और अन्दर आना या शाब्दिक अर्थ में पहले बाहर जाना और फिर लोगों का अन्दर आना) से परिलक्षित है, यदि हम प्रथम आगे निकलकर नहीं आते है, दूसरे हमारे यहाँ नहीं आयेंगे। इसे मन में रखकर, मैं चाहता हूँ कि आप सभी समाज में प्रत्येक के साथ आत्मीयता स्थापित करें और अपने नगरों को मरुद्धान बना दें। अपने घर की खुशी को उद्गम बिन्दु बनाकर, समाज में प्रत्येक के साथ मिलकर चलना शान्ति की दिशा में वृहत् कदम होगा।

From Kosei, March 2018.





# The 7 Parables of the Lotus Sutra

The Sutra of the Lotus Flower  
of the Wonderful Dharma  
Chapter 7  
The Parable of the Conjured City

## मायावी नगरी का दृष्टान्त

एक दूरदराज के क्षेत्र में लम्बा दुरारोह मार्ग है। लोगों का विशाल समूह अमूल्य खजाने की खोज में उस मार्ग से गुजर रहा था। उनका एक मार्गदर्शक था, जिसका ज्ञान विस्तृत और अलौकिक था, तथा वह आगे के मार्ग से पूर्ण परिचित था।



लंबी दूरी की यात्रा के उपरान्त, लोग मार्ग में थक गए और मार्गदर्शक से कहा, “हम पूरी तरह से थके माँदे हैं और आगे नहीं जा सकते हैं। हम पीछे लौट जाना चाहते हैं।” मार्गदर्शक को उन पर दया आ गयी और अपने उपायकौशल्य की शक्ति से यात्रा के आधे मार्ग से परे एक बिंदु पर एक मायावी नगरी निर्माण किया।

थके लोगों में हर्षोल्लास का संचार हुआ, वे मायावी नगरी प्रवेश किया और विश्राम किया। जब मार्गदर्शक ने देखा विशाल समूह के सभी थकान से पूरी तरह मुक्त हो गये हैं, उसने सम्बोधित कर कहा, “आप सभी आगे आये, हम सभी प्रस्थान करेंगे; उस अनमोल खजाना का स्थान नातिदूर है। मैंने वास्तव में उस नगरी को आप सभी के कुछ समय के लिए निर्मित किया था, जिसमें विश्राम कर थकान मिटा सकें।” मार्गदर्शक की बातों ने सभी को उत्साहित किया और खजाने को पाने के लिए आगे बढ़ गये।



## व्याख्या

लम्बा तथा दुरारोह मार्ग हमारे जीवन पथ को दर्शाता है जो दुःखों से भरा है। हम मानव प्राणियों की यात्रा जीवन में सच्ची खुशी की खोज में चल रही है—बुद्ध ज्ञान की प्राप्ति के लिए—जिसे दृष्टान्त में अमूल्य खजाने के रूप में दिखलाया गया है। मार्गदर्शक स्वयं बुद्ध के प्रतीक हैं।

यद्यपि हम खुशी की कामना करते हैं और बुद्ध की धर्मदेशना का पालन करते हैं, हम क्लान्त महसूस करते हैं, जब हमारा जीवन प्रायः मनोनुकूल नहीं चल रहा होता है। हमारे जीवन में दुःख बार बार आता है, उसका कोई अन्त नहीं है, और यह मार्ग के पालन में क्लान्त बनाता है, धैर्य टूटता है और कभी पीछे हट जाने का मन करता है।

ऐसी अवस्था में बुद्ध मार्ग के आधे से अधिक पार करने के उपरान्त एक स्थान पर मायावी नगरी का निर्माण किया। मायावी नगरी श्रावकों और प्रत्येक बुद्धों की धर्मदेशना का प्रतीक है जिसकी बुद्ध ने व्याख्या उपायकौशल्य जो लोगों के सांसारिक दूर करने के लिए है। दृष्टान्त के अनुसार सच्चा आनन्द जिसकी कामना है, जो अमूल्य खजाने की प्राप्ति में है, वह अमूल्य खजाना बुद्ध ज्ञान है, लेकिन अनेक लोग इसे नहीं समझ पाते हैं। वे दैनिक दुःखों से छुटकारा पाने के लिए दुस्साहसपूर्ण कदम उठाते हैं और अनिश्चित सुख की कल्पना करते हैं। इसलिए बुद्ध ने प्रथम प्रतीत्यसमुत्पत्पाद के सिद्धान्त विश्लेषण किया जिसके अनुसार प्रत्येक चीजें जो आँखों के सामने घट रही हैं उनकी स्वतंत्र सत्ता नहीं है, बल्कि अल्पकालिक अपस्थिति अन्योन्याश्रित है। इसका अर्थ है कि मन की शान्ति प्राप्त करने में समर्थ हैं यदि मन चीजों के प्रति आसक्तियों और घटनाओं से मुक्त करा लें। जो लोग इस धर्मदेशना का पालन करते हैं उनको आध्यात्मिक स्वतंत्रता और मन की शान्ति प्राप्त होगी।

जब विशाल समूह को उस मानसिक अवस्था में सुख चैन मिला और ओज का संचार हुआ, फिर भी, मार्गदर्शक ने मायावी नगरी को लोप कर दिया और कहा, “आप सभी को थोड़ी दूर आगे सच्चा आनन्द मिलेगा।” मानव प्राणी का सच्चा आनन्द स्वयं को आराम में रखने में नहीं है, बल्कि दूसरों को खुशी देने में है। अपनी खुशी अलग रखकर, हम बोधिसत्त्व चर्या का पालन करें और अपनी शक्ति का सम्पूर्ण संसार के लिए भरपूर उपयोग करें और क्रमशः बुद्ध ज्ञान (एकयान के सत्य) को प्राप्त करें। यह वही मार्ग जो सच्चा आनन्द देता है और जीवन जीना सार्थक बनता है।

जैसे हम मायावी नगरी से बाहर निकल आते हैं, हम पुनः दुःखों के शिकार होंगे। यह वैसा दुःख नहीं है जिससे छुटकारा पाने की पूर्व में प्रयास किया है। नये प्रकार का दुःख उस प्रयास के साथ आता है जो हम स्वेच्छा से दूसरों की खुशी के लिए करते हैं और हमें भी पुनः हर्षित करेगा। दृष्टान्त के यात्रियों के समान हम सभी दूसरों के साथ मिलकर आनन्द की ओर बढ़ रहे हैं। इसके अतिरिक्त बुद्ध हमारे साथ चल रहे हैं, हममें से प्रत्येक के साथ हैं।

Editorial Supervision by Chuo Academic Research Institute



\*Commentary is based on *Buddhism for Today* and *The Threefold Lotus Sutra: A Modern Commentary*, both by Nikkyo Niwano.



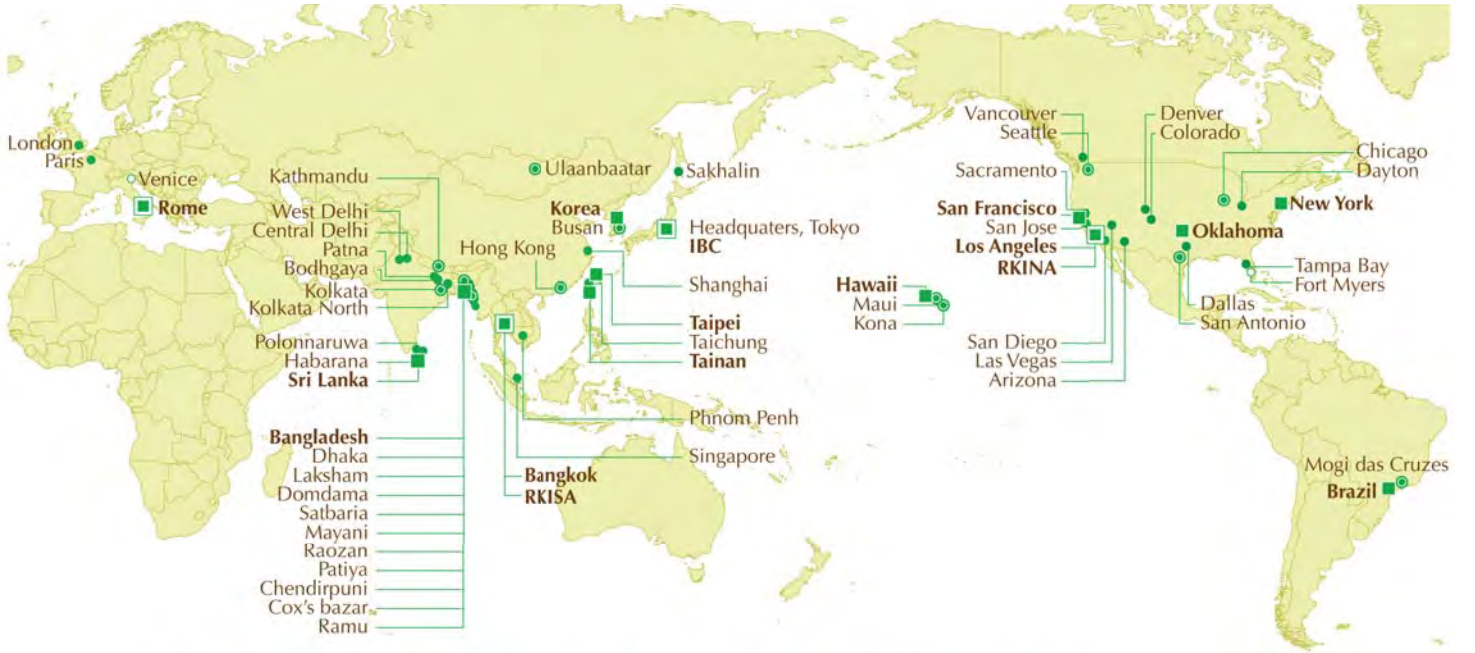
## पूर्ववर्तियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन उत्तम तरीका

इस माह हम रिश्शो कोसेइ काइ की स्थापना का अस्सीवाँ वर्षगाँठ मनाएँगे। हम प्रेसिडेण्ट का अस्सीवाँ वर्षगाँठ भी मना रहे हैं। मैं आप सभी के साथ प्रार्थना करूँगा कि प्रेसिडेण्ट सदा स्वस्थ रहें और हमें दिशानिर्देश करने में अधिक सक्रिय रहें।

नव वर्ष सम्बोधन में प्रेसिडेण्ट निवानो ने हमें 'इकान (*ikan*)' शब्द से परिचय कराया, जो उन दो में एक है जिसे नववर्ष के अवसर पर अपनी कैलिग्राफ़ि में दो चीनी कैरिक्टर को लिखा था, उसका अर्थ सहज एवं सरल होना है। शब्द की व्याख्या करते हुए उन्होंने ने सहज भाव से चीजों को उलंझाये बिना ही, सरल जीवन जीने के महत्व की शिक्षा दी। इस सत्य के बोध के साथ ही, हमारा जीवन प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत पर और प्रकृति के बहुतों से मिल रहे शुभकामनाओं से चल रहा है। उन्होंने 'इकान' का प्रयोग मन के इन विचारों के लिए किया है।

रिश्शो कोसेइ काइ की स्थापना की अस्सीवाँ वर्षगाँठ के अवसर पर प्रेसिडेण्ट निवानो ने हमें संस्थापक, सह- संस्थापक, अन्य धर्मज्ञों तथा पूर्ववर्ती सदस्यों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापन के महत्व की भी शिक्षा दी। मेरा दृढ़ विश्वास है कि डायरेक्टरस कॉलम, मार्च 2018 की ओर से अपने पूर्ववर्तियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का उत्तम माध्यम धर्म का प्रचार प्रसार है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि हममें सभी अधिक से अधिक लोगों को धर्म में प्रवृत्त करायेंगे।

रेवरेन्ट कोईची साइतो  
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल



RISSHO KOSEI-KAI INTERNATIONAL BRANCHES

We welcome comments on our e-newsletter Living the Lotus. Please send us your comments to the following e-mail address.  
E-mail: [living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp](mailto:living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp)



# Rissho Kosei-kai Overseas Dharma Centers

# 2018

## **Rissho Kosei-kai International**

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan  
Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224

## **Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)**

2707 East First Street Suite #1 Los Angeles CA 90033 U.S.A.  
Tel: 1-323-262-4430 Fax: 1-323-262-4437  
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

## **Branch under RKINA**

### **Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center**

28621 Pacific Highway South, Federal Way,  
WA 98003 U.S.A.  
Tel: 1-253-945-0024 Fax: 1-253-945-0261  
e-mail: rkseattlewashington@gmail.com  
http://buddhistlearningcenter.org/

### **Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio**

6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.  
P.O. Box 692148, San Antonio, TX 78269, USA  
Tel: 1-210-561-7991 Fax: 1-210-696-7745  
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com  
http://www.rkina.org/sanantonio.html

### **Rissho Kosei-kai of Tampa Bay**

2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.  
Tel: (727) 560-2927 e-mail: rktampabay@yahoo.com  
http://www.buddhismtampabay.org/

### **Rissho Kosei-kai of Vancouver**

## **Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii**

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.  
Tel: 1-808-455-3212 Fax: 1-808-455-4633  
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

### **Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center**

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.  
Tel: 1-808-242-6175 Fax: 1-808-244-4625

### **Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center**

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona,  
HI 96740 U.S.A.  
Tel: 1-808-325-0015 Fax: 1-808-333-5537

## **Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles**

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.  
Tel: 1-323-269-4741 Fax: 1-323-269-4567  
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

### **Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona**

**Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado**  
**Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego**  
**Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas**  
**Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas**

## **Rissho Kosei-kai of San Francisco**

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.  
Tel: 1-650-359-6951 Fax: 1-650-359-6437  
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

**Rissho Kosei-kai of Sacramento**  
**Rissho Kosei-kai of San Jose**

## **Rissho Kosei-kai of New York**

320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.  
Tel: 1-212-867-5677 Fax: 1-212-697-6499  
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

### **Rissho Kosei-kai of Chicago**

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.  
Tel: 1-773-842-5654 e-mail: murakami4838@aol.com  
http://home.earthlink.net/~rkchi/

### **Rissho Kosei-kai of Fort Myers**

http://www.rkftmyersbuddhism.org/

## **Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma**

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.  
Tel & Fax: 1-405-943-5030  
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

### **Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver**

1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.  
Tel: 1-303-446-0792

### **Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton**

425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.  
http://www.rkina-dayton.com/

## **Rissho Kosei-kai do Brasil**

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,  
CEP 04116-060 Brasil  
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377  
Fax: 55-11-5549-4304  
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

### **Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes**

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,  
CEP 08730-000 Brasil  
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

## **Rissho Kosei-kai of Taipei**

4F, No. 10 Hengyang Road, Zhongjheng District,  
Taipei City 100 Taiwan  
Tel: 886-2-2381-1632 Fax: 886-2-2331-3433  
http://kosei-kai.blogspot.com/

### **Rissho Kosei-kai of Taichung**

## **Rissho Kosei-kai of Tainan**

No. 45, Chongming 23rd Street, East District,  
Tainan City 701 Taiwan  
Tel: 886-6-289-1478 Fax: 886-6-289-1488

### **Rissho Kosei-kai of Pingtung**

## **Korean Rissho Kosei-kai**

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea  
Tel: 82-2-796-5571 Fax: 82-2-796-1696  
e-mail: krkk1125@hotmail.com

### **Korean Rissho Kosei-kai of Busan**

3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea  
Tel: 82-51-643-5571 Fax: 82-51-643-5572

#### Branches under the Headquarters

##### **Rissho Kosei-kai of Hong Kong**

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,  
North Point, Hong Kong, Republic of China

##### **Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar**

15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,  
Ulaanbaatar 15160, Mongolia  
*Tel:* 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

##### **Rissho Kosei-kai of Sakhalin**

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk  
693005, Russian Federation  
*Tel & Fax:* 7-4242-77-05-14

##### **Rissho Kosei-kai di Roma**

Via Torino, 29-00184 Roma, Italia  
*Tel & Fax :* 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

##### **Rissho Kosei-kai of the UK**

##### **Rissho Kosei-kai of Venezia**

##### **Rissho Kosei-kai of Paris**

#### **International Buddhist Congregation (IBC)**

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan  
*Tel:* 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224  
*e-mail:* ibcrk@kosei-kai.or.jp <http://www.ibe-rk.org/>

#### **Rissho Kosei-kai of South Asia Division**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang  
Bangkok 10310, Thailand  
*Tel:* 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218

#### **Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang  
Bangkok 10310, Thailand  
*Tel:* 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218  
*e-mail:* thairissho@csloxinfo.com

#### Branches under the South Asia Division

##### **Rissho Kosei-kai of Central Delhi**

224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi,  
110060, India

##### **Rissho Kosei-kai of West Delhi**

66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka, New Delhi 110075, India

##### **Rissho Kosei-kai of Kolkata**

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

##### **Rissho Kosei-kai of Kolkata North**

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,  
West Bengal, India

##### **Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center**

Ambedkar Nagar, West Police Line Road  
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

##### **Rissho Kosei-kai of Kathmandu**

Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,  
Kathmandu, Nepal

##### **Rissho Kosei-kai of Phnom Penh**

#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,  
Phnom Penh, Cambodia

##### **Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center**

##### **Rissho Kosei-kai of Singapore**

#### **Thai Rissho Friendship Foundation**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang  
Bangkok 10310, Thailand  
*Tel:* 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218 *e-mail:* info.thairissho@gmail.com

#### **Rissho Kosei-kai of Bangladesh**

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh  
*Tel & Fax:* 880-31-626575

##### **Rissho Kosei-kai of Dhaka**

House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,  
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh  
*Tel:* 880-2-8413855

##### **Rissho Kosei-kai of Mayani**

Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,  
District: Chittagong, Bangladesh

##### **Rissho Kosei-kai of Patiya**

Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

##### **Rissho Kosei-kai of Domdama**

Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

##### **Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar**

Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

##### **Rissho Kosei-kai of Satbaria**

Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

##### **Rissho Kosei-kai of Laksham**

Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,  
Bangladesh

##### **Rissho Kosei-kai of Raozan**

West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

##### **Rissho Kosei-kai of Chendirpuni**

Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

##### **Rissho Kosei-kai of Ramu**

#### **Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka**

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka  
*Tel:* 94-11-2982406 *Fax:* 94-11-2982405

##### **Rissho Kosei-kai of Habarana**

151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

##### **Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa**

#### **Other Groups**

##### **Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai**